OM-11- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 08/08/2021 12:56 PM Page 8

परमात्म ऊर्जा

मैं सफलता का सितारा हूँ

अपने आपको सफलता के सितारे हैं - ऐसे अनुभव करते हो? जहाँ सर्वशक्तियां हैं, वहाँ सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई भी कार्य करते हो, चाहे शरीर निर्वाह अर्थ, चाहे ईश्वरीय सेवा अर्थ। कार्य में कार्य करने के पहले यह निश्चय रखो। निश्चय रखना अच्छी बात है लेकिन प्रैक्टिकल अनुभवी आत्मा बन 'निश्चय और नशे में रहो।' सर्वशक्तियां इस ब्राह्मण जीवन में सफलता के सहज साधन हैं। सर्व शक्तियों के मालिक हो इसलिए किसी भी शक्ति को जिस समय ऑर्डर करो, उस समय हाज़िर हों। जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होंगे उतना सर्वशक्तियां सदा ऑर्डर में रहेंगी। थोड़ा भी स्मृति की सीट से नीचे आते हैं तो शक्तियां ऑर्डर नहीं मानेंगी। सर्वेन्ट भी होते हैं तो कोई ओबिडिएन्ट होते हैं, कोई थोड़ा ऊपर-नीचे करने वाले होते हैं। तो आपके आगे सर्वशक्तियां कैसे हैं? ओबिडिएन्ट हैं या थोड़े देर के बाद पहुंचती हैं? जैसे इन स्थूल कर्मेन्द्रियों को, जिस समय,जैसा ऑर्डर करते हो, उस समय वो ऑर्डर से चलती हैं? ऐसे ही ये सूक्ष्म शक्तियां भी आपके ऑर्डर पर चलने वाली हों। चेक करो कि सारे दिन में सर्वशक्तियां आपके ऑर्डर पर होंगी तब ही अन्त में भी आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। तो इस वर्ष में ऑर्डर पर चलाने का विशेष अभ्यास करना। क्योंकि विश्व का राज्य प्राप्त करना है ना! विश्व राज्य अधिकारी बनने के पहले स्वराज्य अधिकारी बनो।

» अभी नहीं तो कभी नहीं «

किसी भी विधि से कमजोरी को मिटाना ही है - यह दृढ संकल्प करो। स्वयं पर और समय पर कोई भरोसा नहीं है। अब नहीं तो कब नहीं अर्थात् जो करना सो अभी करना है।

अगर अभी तक भी कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं होगी तो फाइनल रिजल्ट में क्या होगा? फाइन भरने के लिए धर्मराजपुरी में जाना पड़ेगा। यह सज़ायें फाइन हैं। रिफाइन बन जाओ तो फाइन नहीं भरना पड़ेगा। अपना फाइनल फैसला कर लिया है कि अभी फाइलों के भण्डार भरे हुए हैं? खाता क्लियर हो गया है या मस्तक के टेबल पर यह नहीं किया है- ये फाइलें रही हुई हैं? यह करना चाहिए, यह चाहिए तो नहीं भरी पड़ी हैं? पुराने वर्ष के साथ पुराना खाता खत्म किया! या नये साल में भी पुराने खाते को जमा करके लम्बा किया है? क्या किया है? अगर अब तक भी पुराने खाते का हिसाब-किताब चुक्ता न कर बढ़ाते चलेंगे तो रिजल्ट क्या होगी! जितना पुराना खाता चलाते रहेंगे उतना ही चिल्लाना पड़ेगा। यह चिल्लाना बड़ा दर्दनाक है। एक-एक सेकण्ड एक वर्ष के समान अनुभव होगा। इसलिए अभी भी 'शिव मंत्र' द्वारा समाप्ति कर दो। अभी कईयों के खाते क्लियर नहीं हैं। अब तक पुराने-पुराने दाग भी कईयों के रहे हुए हैं। रबड़ भी लगाते हैं, फिर दाग लगा देते हैं। कईयों का तो पहले छोटा दाग है लेकिन छिपाते-छिपाते बड़ा कर दिया है। कई छिपाते हैं और कई चालाकी से अपने को चलाते हैं- इसलिए गहरा दाग होता जाता है। जैसे बहुत गहरा दाग होता है तो जिस चीज़ पर दाग होता है वही फट जाती है - चाहे कागज़ पर हो, चाहे कपड़े पर हो। वैसे यहाँ भी गहरे दाग वाले को दिल फाड़कर रोना पड़ेगा - यह मैंने किया, यह मैंने किया! ऐसे दिल फाड़ कर रोना पड़ेगा। अगर एक सेकण्ड भी वह दृश्य देखो तो विनाशकाल से भी दर्दनाक है, इसलिए सच्चे बनो, साफ बनो। बापदादा को अभी भी रहम आता है, इसलिए रोज़ अपनी राजदरबार लगाओ। कचहरी करो। चेक करने से चेंज हो जायेंगे।

कथा सरिता

अपना काम स्वयं करें

एक गांव के पास एक खेत में सारस पक्षी का एक जोड़ा रहता था। वहीं उनके अंडे थे। अंडे बड़े हुए और समय पर उनसे बच्चे निकले। लेकिन बच्चों के बड़े होकर उड़ने योग्य होने से पहले ही खेत की फसल पक गयी। सारस बड़ी चिंता में पड़े कि किसान खेत काटने आवे, इससे पहले ही बच्चों के साथ उसे वहां से चले जाना चाहिए और बच्चे उड़ नहीं सकते थे। सारस ने बच्चों से कहा- "हमारे न रहने पर यदि कोई खेत में आवे तो उसकी बात सुनकर याद रखना।"

एक दिन जब सारस चारा लेकर शाम को बच्चों के पास लौटा तो बच्चों ने कहा- "आज किसान आया था। वह खेत के चारों ओर घूमता रहा एक-दो स्थानों पर खड़े होकर देर तक खेत को घूरता रहा। वह कहता था कि खेत अब काटने के योग्य हो गया है। आज चलकर गांव के लोगों से कहूंगा कि वह मेरा खेत कटवा दें।"

सारस ने कहा- "तुम लोग डरो मत! खेत अभी नहीं कटेगा अभी खेत कटने में देर है।"

कई दिन बाद जब एक दिन सारस शाम को बच्चों के पास आए तो बच्चे बहुत घबराए थे - "वे कहने लगे कि अब हम लोगों को यह खेत झटपट छोड़ देना चाहिए। आज किसान फिर आया था, वह कहता था कि गांव के लोग बड़े स्वार्थी हैं। वह मेरा खेत कटवाने का कोई प्रबंध नहीं करते। कल मैं अपने भाइयों को भेजकर खेत कटवा लूंगा।"

सारस बच्चों के पास निश्चिंत होकर बैठा और बोला - "अभी तो खेत कटता नहीं दो-चार दिन में तुम लोग ठीक-ठीक उड़ने लगोगे, अभी डरने की आवश्यकता नहीं है।"

कई दिन और बीत गए। सारस के बच्चे उड़ने लगे थे और निर्भय हो गए थे। एक दिन शाम को सारस से वे कहने लगे- "यह किसान हम लोगों को झूठ-मूठ डराता है। इसका खेत तो कटेगा नहीं, वह आज भी आया था और कहता था कि मेरे भाई मेरी बात नहीं सुनते सब बहाना करते हैं। मेरी फसल का अन्न सुखकर झर रहा है। कल बड़े सवेरे में आऊंगा और खेत काट लूंगा।

सारस घबराकर बोला - "चलो जल्दी करो। अभी अंधेरा नहीं हुआ है। दूसरे स्थान पर उड़ चलो। कल खेत अवश्य कट जायेगा।"

बच्चे बोले- "क्यों? इस बार खेत कट जाएगा यह कैसे?

सारस ने कहा-"किसान जब तक गांव वालों और भाइयों के भरोसे था तो खेत के कटने की आशा नहीं थी। जो दूसरों के भरोसे कोई काम छोड़ता है उसका काम नहीं होता, लेकिन जो स्वयं काम करने को तैयार होता है उसका काम रुका नहीं रहता। किसान जब स्वयं कल खेत काटने वाला है, तब तो खेत कटेगा ही।"

अपने बच्चों के साथ सरस उसी समय वहाँ से उड़कर दूसरे स्थान पर चला गया।"

सीख :- हमें दूसरों के भरोसे रहने के बजाय स्वयं का काम स्वयं ही करना चाहिए।

बुराई के आगे अच्छाइयों को छोटा न करें

एक राजा था। उसने 10 खूंखार जंगली कुत्ते पाल रखे थे। जिनका इस्तेमाल वह लोगों को उनके द्वारा की की गयी गलतियों पर मौत की सजा देने के लिए करता था।

एक बार राजा के एक पुराने मंत्री से कोई गलती हो गयी। अतः क्रोधित होकर राजा ने उसे शिकारी कुत्तों के सम्मुख फेंकने का आदेश दे दिया।

सजा दिये जाने से पूर्व राजा ने मंत्री से उसकी आखिरी इच्छा पूछी। "राजन! मैंने आज्ञाकारी सेवक के रूप में आपकी 10 सालों से सेवा की है। मैं सजा पाने से पहले आपसे 10 दिनों की मोहलत चाहता हूँ।" मंत्री ने राजा से निवेदन किया।

राजा ने उसकी बात मान ली। दस दिन बाद राजा के सैनिक मंत्री को पकड़ कर ले आये और राजा का इशारा पाते ही उसे खूंखार कुत्तों के सामने फेंक देते हैं। परंतु यह क्या कुत्ते मंत्री पर टूट पड़ने के बजाय अपनी पूंछ हिला-हिला कर मंत्री के ऊपर कूदने लगते हैं और प्यार से उसके पैर चाटने लगते हैं।

राजा आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि आखिर इन खूंखार कुत्तों को क्या हो गया है? वे इस तरह क्यों व्यवहार कर रहे हैं?

आखिरकार राजा से रहा नहीं गया। उसने मंत्री से पूछा, "ये कुत्ते तुम्हें काटने की बजाय तुम्हारे साथ खेल क्यों रहे हैं?"

"राजन! मैंने आपसे जो 10 दिनों की मोहलत ली थी, उसका एक-एक क्षण मैं इन बेजुबानों की सेवा करने में लगा दिया। मैं रोज इन कुत्तों को नहलाता, खाना खिलाता व हर तरह से उनका ध्यान रखता। ये कुत्ते खूंखार और जंगली होकर भी मेरे दस दिन की सेवा नहीं भूला पा रहे हैं, परंतु खेद है कि आप प्रजा के पालक होकर भी मेरी 10 वर्षों की स्वामिभक्ति भूल गये और मेरी एक छोटी-सी त्रुटि पर इतनी बड़ी सजा सुना दी!"

राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ, उसने तत्काल मंत्री को आजाद करने का हुक्म दिया और आगे से ऐसी गलती न करने की सौगंध ली।

सीख :- किसी की हज़ार अच्छाइयों को उसकी एक बुराई के सामने छोटा न करें। सहनशीलता के साथ-साथ क्षमाशीलता की भावना रखें।